# गंगा बोली

**सुधा गोयल**
बुलंदशहर (उ.प्र.)

मैं गंगा के किनारे हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही थी कि हे गंगा मैया आप मोक्ष दायिनी और पापविनाशनी हैं। मुझे भी पापों से मुक्त करिए। मैंने जीवन में जाने–अनजाने बहुत से पाप किए हैं आज उनका विसर्जन करने आई हूं।

गंगा जो अभी तक मंथर गति से लयबद्ध होकर बह रही थी। उसकी लहरों में एक ताल और संगीत था, अचानक सब बदल गया और उसकी लहरें ऊंची–ऊंची उठकर किनारों से टकराकर विचित्र क्रंदन करने लगी। लगा जलजला आने वाला है। मैं हतप्रभ कि ये क्या हुआ।

अचानक मेरे ज्ञान चक्षु खुल गये। गंगा की रौद्र वाणी मेरे अंतःकरण को छूने लगी। उसकी तेज–तेज उठती तरंगें इस बात का संकेत थी कि वह क्रोधित है और कुछ कहना चाहती है। मुझे लगा गंगा कह रही है।

पाप तुम करो और धोऊ मैं? क्या सोचकर पाप किए थे कि गंगा में डुबकी लगा कर गंगा की तरह पवित्र हो जाऊंगी। पर तुमने मुझे कहां निर्मल छोड़ा है? अपने मल–मूत्र, अपने शव, मिलों कारखानों का गंदा पानी, गंदे नाले सब मुझमें डालकर मुझी को जहरीला बना दिया है। मेरा जल तो आचमन के लायक भी नहीं रहा। मेरा दुख तुम्हें दिखाई नहीं देता। मेरी करूण पुकार कोई नहीं सुनता। मैं भी जल्दी ही अपनी बहन सरस्वती की तरह लोप हो जाऊंगी। तुम मेरा प्रलयकारी रूप नहीं देख रही। आठ साल पहले की जल प्रलय याद नहीं? जो जैसा करता है वैसा ही फल पाता है। अपने–अपने कर्मों का फल सबको भोगना पड़ता है।

कभी थी निर्मल और पतित पावनी, जब मेरे जल को अपावन नहीं किया जाता था। मेरे किनारे फैक्ट्री और मिलें नहीं थी। बड़े–बड़े नाले मुझ में नहीं डाले जाते थे। मेरी सफाई के नाम पर अरबों रूपए पेटों में उतर गये। बंदर बांट होती रही और मैं कातर निगाहों से देखती रही कि शायद अब कोई मेरा उद्धार करने आए।

हिमालय से निकल कर चार कदम ही चली थी कि मेरा अपहरण कर लिया गया। अब तुम मेरा दूसरा रूप देखो। हिमालय भी नाराज है। टूट रहा है, उफन रहा है और पिघल रहा है। तुम नहीं रूके तो विनाश का और भी प्रचंड रूप देखोगे।

चेतावनी देकर, शांत होकर गंगा फिर अपनी चाल से चलने लगी। अब मेरी बारी थी। मैं सोचने लगी कि गंगा की बातों में सार है। और कुछ न सही लेकिन उसकी बातों को जनमानस तक तो पहुंचा सकती हूं। बस कलम उठाकर गंगा का संदेश दे रही हूं कि समय रहते गंगा बचा लो।